दैनिक जागरण
भोपाल, 20 नवंबर 2016 | राजधानी | www.jagranmp.com/epaper

विकास विषय पर संगोष्ठी आज

कारिता सप्ताह के अंतर्गत सहकारिता के
च का विकास विषय पर राज्य स्तरीय
12.30 बजे अपेक्स बैंक मुख्यालय
है। संगोष्ठी में मुख्य अतिथि राज्यमंत्री

गुर्जर समाज के चुनाव 15 जनवरी को

भोपाल। गुर्जर समाज समिति भोपाल के सचिव प्रताप सिंह गुर्जर ने बताया कि समाज की एक कार्यसमिति की बैठक आयोजित की गई जिसमें यह निर्णय लिया गया कि गुर्जर समाज समिति भोपाल के द्विवार्षिक आम चुनाव 15 जनवरी 2017 को तुलसी नगर स्थित गुर्जर भवन में संपन्न कराए जाएंगे। चुनाव के लिए सदस्यों की सूची का प्रकाशन 4 दिसम्बर को किया जाएगा।

पशुओं को एंटीबायोटिक का ओवरडोज, असर इंसानों पर

अर्पण खरे, भोपाल

पशुओं से मिलने वाले खाद्य पदार्थ जैसे दूध, अंडा, मांस हमारे लिए घातक हो सकते हैं। गाय, भैंस और बकरी से मिलने वाले दूध की क्षमता को बढ़ाने अधिक मात्रा में इन पशुओं पर एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग किया जा रहा है। इसी तरह मुर्गी के अंडा और बकरे की ग्रोथ जल्दी करने के लिए इन स्त्रोतों पर बहुत मात्रा में एंटीबायोटिक का यूज किया जा रहा है, जिसकी वजह से जन स्वास्थ्य पर इसका बुरा असर पड़ रहा है। विशेषज्ञों की माने तो बिना डाक्टर की सलाह के खाद्य पदार्थ देने वाले पशुओं पर एंटीबायोटिक का उपयोग मानव शरीर की शारीरिक क्षमता को कम कर रहे हैं। साथ ही इनके लंबे समय तक उपयोग से हमारी प्रजनन क्षमता के साथ लिवर और किडनी पर भी बुरा प्रभाव डाल रहे हैं।

जागरण संडे स्पेशल

पशुओं में खासकर गाय, भैंस में दूध उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए ऑक्सीटोशन एंटीबायोटिक का अधिक मात्रा में उपयोग किया जा रहा है। यहीं दूध जब लोग इस्तेमाल करते हैं तो उनके हारमोनल असंतुलित होने लगते हैं, जिससे धीरे-धीरे हमारी शारीरिक क्षमता कम होने लगती है और इसका असर प्रजनन क्षमता पर पड़ता है।

मानव शरीर में आकर रिस्पांड नहीं करेगी: पशुओं में उपयोग लाने वाली कुछ दवाएं जैसे क्रीमो ड्रग्स पर साफ लिखा रहता है कि इन दवाओं के सेवन रहते न तो इनका स्लाटर यानी मांस उपयोग में लाया जाए और न ही दूध बेचा जाए। यह मानव शरीर के विभिन्न अंग जैसे लिवर, किडनी आदि को प्रभावित कर सकते हैं। दवाओं का डोज ज्यादा देने पर हमारे शरीर में आकर रिस्पॉन्ड नहीं करेगी।

हमें सीजनल बीमारी तुरंत होती है - विशेषज्ञों की माने तो मुर्गियों के दाने में कई इकाइयां मिली रहती है, जिन्हें फीड में मिलाते हैं। इनका अंश मुर्गी के अंडे और मांस में रह जाता है। यह एंटीबायोटिक, मिनिरल्स और विटामिन मानव शरीर पर साइड इफैक्ट्स करते हैं। इसी तरह बकरा और पाड़ा को इलाज के दौरान स्लाटर भेजा जाता है, तो उनका असर भी मानव शरीर पर पड़ता है। यह हमारी प्रतिरोधकता क्षमता कम करती हैं, जिससे वर्तमान में चल रही या सीजनल बीमारी तुरंत हो सकती है।

प्रजनन क्षमता के साथ लिवर व किडनी पर हो रहा असर

सेहत के लिए जिस दूध, दही, घी, मक्खन, छाछ या अंडे को आप हेल्दी डाइट मानकर हर रोज खा-पी रहे हैं, वह भी आपको बीमार कर सकते हैं। वजह हैं, गाय, भैंस, बकरी और मुर्गी सहित विभिन्न पशु-पक्षियों की उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए जरूरत से ज्यादा दी जा रहीं एंटीबायोटिक दवाएं। विशेषज्ञ मानते हैं कि यह इन पशुओं के उत्पाद के साथ मिल रही एंटीबायोटिक इंसानों की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी कम कर रही है।

एंटीबायोटिक से प्रतिरोधकता क्षमता खत्म हो जाती

इसी तरह खाद्य पदार्थ मुर्गी या बकरा यदि बीमार है और उसे एंटीबायोटिक या अन्य तरह की दवाएं दी जा रही हैं, तो इलाज खत्म होने के एक हफ्ते बाद ही उन्हें स्लाटर के लिए भेजना चाहिए, लेकिन अमूमन ऐसा होता नहीं है और इन चीजों को दरकिनार करते हुए मुर्गी और बकरे के मीट को स्लाटर के लिए भेज दिया जाता है और उनकी बीमारी का असर मानव शरीर पर पड़ता है। मुर्गी को बीमारी से बचाने के एंटीबायोटिक एम्नोप्लोस्का दी जाती है। जब मांस के माध्यम से यह एंटीबायोटिक मानव शरीर में आता है, निरंतरता न होने के कारण एक समय के बाद इस एंटीबायोटिक का हमारे शरीर पर कोई असर नहीं होता है। यानी उस एंटीबायोटिक के प्रति हमारी प्रतिरोधक क्षमता खत्म हो जाती है।

रजिस्टर्ड पशु चिकित्सकों के मार्गदर्शन में दवाओं का उपयोग

देखने में आया है कि पशुओं में दूध, मीट, अंडा इत्यादि उत्पाद को बढ़ाने के लिए पशुपालक स्वयं ही डाक्टर बन गया है। वह बिना डाक्टर की सलाह के पशुओं में दवाओं का उपयोग कर रहा है। राज्य पशु रोग अन्वेषण प्रयोगशाला के असिस्टेंट डायरेक्टर डा. तुषार लोखंडे का कहना है कि रजिस्टर्ड पशु चिकित्सकों के मार्गदर्शन में ही दवाओं का उपयोग किया जाना चाहिए। ताकि पशुओं में दवाओं का रेसीडियल मात्रा कितनी होने के साथ शरीर में हाफ लाइफ तथा उनके अंश कब रहेंगे, यह जानकारी पशुपालकों को रहेगी।

गिद्ध मरने लगे और आज खत्म होने की कगार पर हैं

डाइक्लोफेनेक (दर्द निवारक दवा) बैन हो चुकी है। इसका उपयोग पशुओं में होता है। इन दवाओं का अंश पशुओं के शरीर में रह जाता है। जब ये पशु मरते हैं या उनका मांस मानव उपयोग में लाता है तो इसका विपरीत प्रभाव शरीर पर पड़ता है। राज्य पशु रोग अन्वेषण प्रयोगशाला के अतिरिक्त उपसंचालक उदय तपासे की माने तो डाइक्लोफेनेक दवा इतनी घातक थी कि इसकी वजह से गिद्ध की जनसंख्या कम हुई और उनकी प्रजनन क्षमता घटी। धीरे-धीरे ये खत्म होने की कगार है।

जनहित में क्रेता व विक्रेता को ईमानदारी से काम करना चाहिए, ताकि किसी के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव न पड़े. लेकिन ऐसा कम ही होता है इसके लिए कानून कठोर उठाए जाने चाहिए।

डा. एचएल साहू, डिप्टी डायरेक्टर राज्य पशु चिकित्सालय, भोपाल